



શ્રી શાંતિ - મુક્તિ સમ્યગ્જ્ઞાન અભ્યાસક્રમ

C/O. શાહ ગોવિંદજી વીરમ, ફેકટરી કમ્પાઉન્ડ, મૌટા રોડ, ઓરંગાબાદ - ૪૩૭ ૦૦૧

સમ્યગ્જ્ઞાન પ્રવેશકા

◆◆ અભ્યાસક્રમ જવાબ પત્ર ◆◆

ઝોઝરો ૫૨ - ૨૦૨૨

એનરોલમેન્ટ નંબર

૫

ગામ

વિદ્યાર્થીનું નામ

પ્રશ્ન-૧ ખાલી જગ્યા

- (૧) ડ્રોન
- (૨) રાધી
- (૩) સાધુ-ચારણ
- (૪) કુલદ્વારી
- (૫) રિફ્લેક્ટર
- (૬) વિના
- (૭) જગ્યા(૧)
- (૮) સાંચર
- (૯) રીત
- (૧૦) માના(ભો)ગ
- (૧૧) દાર્ઢિપત્રા
- (૧૨) શાશ્વતા
- (૧૩) સોપાઠ
- (૧૪) મનીંદ્રિ
- (૧૫) શાંતિ
- (૧૬) પાપ તરી
- (૧૭) ક્રોષ્ટી
- (૧૮) અદૃશ્ય
- (૧૯) રામરોગી
- (૨૦) માનારાશી

પ્રશ્ન-૨ એક જ શબ્દમાં

- (૧) કુપોત
- (૨) નિદ્રા-નિદ્રા
- (૩) સાધુ-ચારણ
- (૪) વાનાતી પુષ્પ
- (૫) જિન સુરતિ
- (૬) શીખ
- (૭) પાપ
- (૮) રાધા(૧)
- (૯) ના(ભ)
- (૧૦) પ્રોણિક રાખ
- (૧૧) પ્રી શાંતિની એપ્યુ
- (૧૨) લિઙ્ગિન્દ્રિ
- (૧૩) લિંગિન્દ્રિ
- (૧૪) દુર્ગિકી
- (૧૫) નદાવત

પ્રશ્ન-૩ શબ્દનો અર્થ

- (૧) ઓછી
- (૨) વેરયાગામન
- (૩) સ્થા
- (૪) ક્રિયા

પ્રશ્ન-૪ જોડકાં જોડો

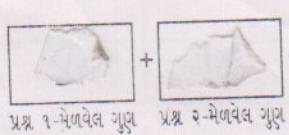
- (૧) ત
- (૨) પ
- (૩) એ
- (૪) ન
- (૫) ચ
- (૬) ન
- (૭) ચ
- (૮) એ
- (૯) ત
- (૧૦) ન

પ્રશ્ન-૫ સંખ્યામાં જવાબ

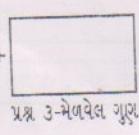
(૧)	૨૩
(૨)	૧૪
(૩)	૨૫
(૪)	૫૫
(૫)	૪૩
(૬)	૮
(૭)	૮૨
(૮)	૨૧
(૯)	૨૯
(૧૦)	૧૨

પ્રશ્ન-૬ કે X
આ પણ છે ને નથે

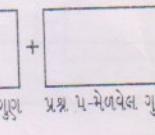
(૧)	૮
(૨)	X
(૩)	૧૫
(૪)	૨૨
(૫)	૧૦
(૬)	૮
(૭)	૧૫
(૮)	૨૫
(૯)	૨૨
(૧૦)	૮



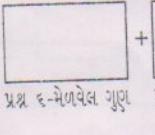
પ્રશ્ન ૧-મેળવેલ ગુણ



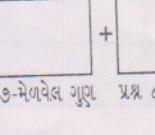
પ્રશ્ન ૨-મેળવેલ ગુણ



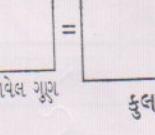
+



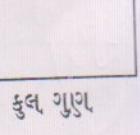
+



+



=



કુલ ગુણ

રીમાંક

તપાસનારની સહી

१. पाप मूलिकताने आप्सी ही जे ८२ मुकारे लोगवाय दी. तेमां सानावरणीय ना पांच लीटी नीचे मुझब छे.

१) भांतिरानावरणीय कर्म - इन्द्रिय अने भनये अणीथे ते भांतिरान थेने आवरण करे ते भांतिरानावरणीय कर्म.

२) शुतरानावरणीय कर्म - साँलघोनी, सदृशास्त्रानुं ते शान प्राप्त थाय ते शुतरान थेने आवरण करे ते शुतरानावरणीय कर्म.

३) अवादिरानावरणीय कर्म - भर्यादा माँ रहेलां उपी पदार्थीने भण्डारुं ते अवादिरान तेने आवरण करे ते अवादिरानावरणीय कर्म.

४) भनः पर्यवर्तानावरणीय कर्म - अढो हिपभाँ रहेलां संस्की पंथोन्द्रियना भनीगत लाग अणवासे भनः पर्यवर्तान तेवे आवरण करे ते भनः पर्यवर्तानावरणीय कर्म.

५) कैवलरानावरणीय कर्म - अपेंपणी लोडालीकरुं लथा उपी-अउपी सर्व द्रव्योनुं ज्ञवाग्वना सर्व घर्याच्यानुं समजाले भण्डारुं ते कैवलरान तेने आवरण करे ते कैवलरानावरणीय कर्म.

२. श्रावकनां लोकप्रियताना गुणाने प्राप्ति कर्यान्ति आलिखाधा वाला गुवोने मध्यम गुवनमांदी साते व्यासनो ने दृक्करवा रह्या. भद्रा नामनुं तीकु व्यसन तेवा दारीमां नाना-भोरासुभी माँ आगत लगाडी छे. दाहा गुवो विलिध रोगी ना शिकार अन्याछे. अनेक परिवार निराधार, अनाव थाय दी. आपाणी आभाने अधिगाति तरक्क लर्दाचाय दी.

ज्ञानकाना विनाशना गुणगां माद्रा नामनी व्यसनान हनुं. रोटी नामनुं दृक्कु व्यसन, बोगनी अनुसा वगर वस्तुचो लेवी, पाढी न करवी ने योरी. आजे लोकी माँ प्रामाणिकतां घटनी भय दी. चैसा खावानी वृत्ति वधारी देखाय दी. योरी येसानी आसक्ति वधारे दी, खोकु लोलावे दी. एक पाप अनेक पापीने जन्म आपे दी. र्सासारना समस्त दुःखोनुं करणे सात व्यासनो दी ने परलोक माँ दुर्गालि अपावे दी अने आ लव माँ पण लर्दाकर फली आपी दी झाटे व्याप्त दी.

३. शांति नाव मूलुना सम्यक्ता यछोना १२ लवीमांदी १०मी भव ऐले भेदरथ रामनो भव. ते अत्यंत धर्म निष्ठ अने दयावान हता. इन्द्री पीतानी सलामां तेमना गुणोनी प्रशंसा करी जे सहन न थावाथी एक देवी पारेवाने रामनो शारणागत बनावी सिंचाणे तरीके त्यां आवी पीतानी भक्त्य लेवानी आग्रह करो. रामचे शारणागत पारेवाने ने बथाववां पीताना रारीनुं मांस घरी थी कपी आपवा मांक्यु पर्दतु देवभावादी चारेवा ना वजन जेत्वा न थता देवटे पीते ज पीतानी भक्त्य तरीके सिंचाणा ने सोपी ग्राजवामी लेसोगया. अहो! देवी दया लाव, देवी धर्मनिष्ठा. आ भेद देव नभी पक्ष्यो, कमा गांगी. ते ज भवमाँ मूलुना आत्माचे हीक्का लहज वीरस्थानक तपा आराधी लीर्धकर नाम कर्म उपार्जन कर्म अने अनशन करी सर्वार्थसिद्धि विमानगां हैव थाट.

४. १४ राजलोकमाँ नीचेना कृद्दक ७ राजलोक माँ नैरकु पूर्वीची आवेली दी ज्यां नारकीना गुवो पूर्व करेला दमोना। उद्या दी ज्यम लहज दोर दुःखी दी भेदी दी. ज्ञानीदी प्रमाणी नाम-गोत्र अने लंबाई दी.

नारकी.	नाम	गोत्र	लंबाई	वेदना	इक्का भेद्याना एक राज पहोलाई वाला भागमां ज
१	दमारा	रत्नप्रभा	१ राज	१, वरमाधामी	नारकीना गुवो रही दी. आ नरक पूर्वांची नै गुवो
२	दंशा	शार्कराप्रभा	२ राज	कृत वेदना होय	ज्ञी कोतकृत वेदना दी नेके लुभ, लरस, रीत,
३	बीला	दालुकप्रभा	३ राज		उपरां, ज्वर, दाद, कुंकु, परवशता, लव, शोक
४	धूंजना	र्दकप्रभा	४ राज	कोतकृत अने	ज्ञी दोतकृत वेदना दी नेके लुभ, लरस, रीत,
५	रिता	धुमप्रभा	५ राज		उपरां, ज्वर, दाद, कुंकु, परवशता, लव, शोक
६	मदा	तमः प्रभा	६ राज	अ-योन्या कृत वेदना होय.	ज्ञी दोतकृत वेदना दी नेके लुभ, लरस, रीत,
७	भद्रावती	तमस्तमः प्रभा	७ राज		उपरां, ज्वर, दाद, कुंकु, परवशता, लव, शोक

परमाधामी कृत वेदना अन्योन्या कृत वेदनाची हीजेशां होय जादी.

३. शक्त ऐले दिन्दू स्त्री रेट्ले स्त्रीवना. इन्द्री द्वारा आ सुगथी अरिहंत लगावंती नी स्त्रीवना करवामाँ आवी दी. आ सुगमाँ अरिहंत भगवंतीना विशिष्ट गुणी दर्शाया दी. आ सुगमाँ ८ भी अने ८ भी गाथानुं विवेचान आ प्रकारी दी. अरिहंत पूर्ण भीती रागदेखने गुल्या दी, बोगने जितावनारादी दी, भीते र्सासार सागर थो नर्या दी अने तारनारादी दी, तत्वना भीती ने भगवार अने भीती प्रमाणनार दी, सर्व भंदानी दी गुक्त थयीला अने बोगने गुक्त अपावनार दी. तेथी चैदा स्थानी गांध थाया दी के ज्यां सर्व भगवाराची लवा। सर्व भेद शक्तनाराची, उपद्रवाची, रहित, स्थिर, व्याधि अने वेदनाची रहित अंत रहित क्षदापि क्षय नाहि प्रमाणनार, कर्मज्वरामीडाची दी रहित, ज्यां दी र्सासार माँ पाढु आववानुं नथी लेवा सिह थयीला गुणो नी गोत्र ऐले के सिहगाती दी. तथा ज्ञेयी साते लवी ने गुल्या दी ते जिनीवरीने नभस्कार हो.